समानकर्तृकयोः पूर्वकाले सूत्रविचार

(भाष्यकार एवं टीकाकारों की दृष्टि में)

डॉ. ललित प्रधान

शोधसार- प्रस्तुत शोधपत्र में समानकर्तृकयोः पूर्वकाले 3.4.21 सूत्र पर भाष्यकारों एवं टीकाकारों की दृष्टि से विस्तृत विवरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस सूत्र में क्त्वा प्रत्यय के प्रयोग के संबंध में व्यावहारिक समस्याओं का सोदाहरण समाधान प्रस्तुत किया गया है। 'पूर्वं भुक्त्वा ततो व्रजति' वाक्य में क्रिया अथवा कर्ता की पूर्वकालता का युक्तियुक्त विवेचन, इस प्रसंग में पूर्व शब्द द्वारा क्रिया और कर्ता की पूर्वकालता का द्योतन एवं 'आस्यते भोक्तुम्' वाक्य में क्त्वा प्रत्यय का लोक में अनभिधान के कारण अप्रयोग विषयक सुन्दर व्याख्या की गई है।

कूटशब्द- पाणिनि, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, पंतजलि, कैयट, नागेशभट्ट समानकर्तृक, क्रिया, शक्ति, शक्तिमान्, पूर्वकाल, उत्तरकाल, क्त्वा, तुमुन्, पूर्व, पश्चात्, वासरूपविधि, नान्तरीयक, व्यादान।

प्रस्तावना - समानकर्तृकयोः पूर्वकाले 3.4.21 यह सूत्र क्त्वा प्रत्यय का विधान करता है। क्त्वा प्रत्यय के प्रयोग के सम्बन्ध में हमे बहुत सी व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे शंका उत्पन्न होती है कि क्त्वा प्रत्यय के प्रयोग के शास्त्रीय नियम एवं सिद्धांत क्या है। इसके अतिरिक्त क्त्वा प्रत्यय तथा तुमुन् प्रत्यय से क्या मुख्य अंतर है इत्यादि विषयों पर विभिन्न टीकाकारों के परिप्रेक्ष्य में विचार किया गया है।

सूत्र का सामान्यार्थ यह है कि, यदि दो धातुओं के अर्थों का कर्ता एक ही हो तथा उनमें से किसी एक धातु का अर्थ पूर्वकाल में स्थित हो तो ऐसी पूर्वकाल में स्थित धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। उदाहरण - भुक्त्वा व्रजति, पीत्वा व्रजति।

कैयट के अनुसार यहाँ समानशब्द एक का वाचक है, तुल्य का नही। शक्ति और शक्तिमान् दोनो में भेद मानने पर एककर्तृकत्व नही बन पाएगा।[1] अभेद मानने पर ही दोनो क्रियाओं का कर्ता एक होगा अन्यथा दोनो क्रियाओं में कर्तृत्वशक्ति भेद से एकत्व न होने से प्रत्ययोत्पति नही हो पाएगी।

नागेश कहते है कि कर्तृशब्द से सामान्य रूप से शक्ति का ही अभिधान होता है। 'विभज्यते अनया प्रातिपदिकार्थः इति विभक्तिः' ऐसा कह कर वहाँ शक्ति का ही भेद किया जाता है। एक ही द्रव्य के अन्दर अनेक प्रकार की शक्तियां हैं। उस शक्ति का भेदन करके विभक्ति उसको प्रदर्शित कर देती है। इसीलिए हम कर्मत्व, करणत्वादि भेद व्यवहार कर पाते है। वस्तुतः

सारी शक्ति ही द्रव्य या पिण्ड के अन्दर होती है। विभक्तियों से केवल अभिव्यक्ति मात्र होती है।

प्रश्न हो सकता है कि, शक्ति यदि दो क्रियाओं में हो रही हो तो प्रत्येक क्रिया की शक्ति भिन्न होगी उस स्थिति में एककर्तृकत्व युक्त नही हैं।[2] इसका उत्तर यह है कि शक्तिमान गत जो एकत्व है उसका आरोप शक्ति में करने पर अनेक बार प्रयुक्त होने पर भी एक ही कहलाएगी कभी-कभी शक्ति का आरोप हम पिण्डगत एकत्व में भी कर देते है। जैसे- सप्तमी-पंचम्यौ कारकमध्ये[3] सूत्र के 'अद्य भुक्त्वा देवदतः द्व्यहाद्भोक्ता' में करते है। यहाँ पर आज खाने वाले देवदत्त की कर्तृशक्ति का तथा दो दिन बाद खाने वाले देवदत्त की कर्तृशक्ति के परस्पर भिन्न होने पर भी पिण्ड देवदत्त में एकत्व का आरोप कर देते है। भुक्त्वा व्रजति इत्यादि में पिण्डगत एकत्व का आरोप शक्ति में करते है।

पूर्वं भुङ्क्ते पश्चाद् व्रजति वाक्य में क्त्वा की प्राप्ति - 'पूर्व भुङ्क्ते पश्चाद् व्रजति देवदत्तः' इस वाक्य में भी भुजि तथा व्रजि दोनो क्रियाओं का कर्ता देवदत्त होने से क्त्वा प्रत्या होना चाहिए।

इसका समाधन यह है कि इस वाक्य में पूर्व तथा पश्चात् के द्वारा ही क्त्वा के अर्थ को कह दिया गया है। इसलिए पुनः क्त्वा प्रत्यय नही होता।

कैयट का मत - कैयट का विचार है कि दो क्रियाओं के एककर्तृकत्व होने पर पूर्वकालिक क्रिया की द्योतना में क्त्वादि प्रत्यय का विधान किया जाता है उसके विषय में नही। पूर्व भुङ्क्ते इत्यादि वाक्य में पूर्व शब्द क्रिया की पूर्वकालता को कह रहा है अतः क्त्वा प्रत्यय नही होगा। 'विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु' सूत्र में भी अग्रादि के साधन पूर्व काल का विषय होने से क्त्वा प्रत्यय नही होता।

नागेश का मत- नागेश के अनुसार यहाँ धातु की पूर्वकाल विशिष्ट क्रियावृत्तिता नही है, कि स्वार्थमात्र वृत्तिता है।[5] अर्थात् पूर्वकाल में वर्तमान जो विशिष्ट क्रिया उसमें वर्तमान जो धातु उससे क्त्वा प्रत्यय होता है परन्तु यहाँ ऐसा नही है अपितु स्वार्थमात्रवृत्तिता है। धातु स्वार्थ तक ही सीमित है, पूर्वकाल की द्योतना क्त्वा प्रत्यय द्वारा होती है।

पूर्वं भुक्त्वा ततो व्रजति वाक्य में क्त्वाविधान विचार - प्रश्न यह है कि यदि 'पूर्वं भुङक्ते पश्चाद् व्रजति' में क्त्वा प्रत्यय नही होता तब 'पूर्वं भुक्त्वा ततो व्रजति' में क्त्वा प्रत्यय कैसे हुआ?

यहाँ भुजि क्रिया की पूर्वकालता नही है अपितु कर्ता की पूर्वकालता है। पहले देवतत्त खाता है, पश्चात् अन्य लोग खाते है। इस प्रकार अन्यों की दृष्टि से पूर्वादि शब्दों का प्रयोग है न कि क्रिया की दृष्टि से अतः कोई दोष नहीं।

कैयट के अनुसार भुजि क्रिया की पूर्वकालता दो प्रकार से हो सकती है।[6] व्रजिक्रिया की अपेक्षा पूर्वकालता होने पर उसमें क्त्वा प्रत्यय होता है। जब अन्य भोक्ताओं द्वारा साध्य भुजि क्रिया होगी तब उसको पूर्व शब्द कहता है। तत्पश्चात् अग्रादि सूत्र से क्त्वा तथा णमुल् प्रत्यय

होते है। अतः 'अग्रे भोजं भुक्त्वा व्रजति' तथा 'पूर्वं भोजं भुक्त्वा व्रजति' इत्यादि बन जाते हैं। वस्तुतः जो कर्तृपूर्वकलता की बात कही गई है वह क्रियाद्वारक ही होती है क्योंकि काल का व्यवहार क्रिया के अधीन है।

आस्यते भोक्तुम् में क्त्वा प्राप्ति विचार- आस्यते भोक्तुम् में 'आस्' क्रिया के भुजि क्रिया से पूर्व प्रवृत्ति होने कारण क्त्वा होना चाहिए। पहले बैठना क्रिया होती है। तदनन्तर भोजन क्रिया होती है। इसलिए 'आस्' पूर्वकालिक होने से 'आसित्वा भोक्तुम्' ऐसा होना चाहिए यह भाव है।

इसका समाधान यह है कि यहाँ वाऽसरूपविधि से लट् प्रत्यय होता है क्योंकि लट् भी भोजन क्रिया के सम्पादन से पूर्व आसन क्रिया का समाधान करता है।[8] कैयट के अनुसार वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्[9] में स्त्रियाः प्राक् स्त्र्यधिकार से पहले-पहले यह पक्ष नहीं हैं। अपितु स्त्र्यधिकार में वाऽसरूपविधि नहीं होती है यह पक्ष है। जब आसि से क्त्वा प्रत्यय होता है तब भुजि क्रिया से तुमुन् नहीं होता क्योंकि उसका लोक में अभिधान नहीं है। अर्थात् 'आसित्वा भोक्तुम्' इस प्रकार का प्रयोग लोक में नही मिलता। इसीलिए भुजिक्रिया से लडादि ही आसित्वा भुङ्क्ते प्रयोग होते है।

'क्त्वा तथा तुमुन्' में मौलिक भेद- 'क्त्वा' तथा 'तुमुन्' दोनो भाववाची प्रत्यय है। पुनरपि दोनों में एक मौलिक भेद है, जिस के कारण 'आसित्वा भोक्तुम्' वाक्य का प्रयोग एक साथ लोक में नही देखा जाता।

'भुक्त्वा व्रजति' वाक्य में भोजन क्रिया पहले है। अर्थात् पूर्वकालवर्ती भोजन क्रिया का द्योतन 'क्त्वा' प्रत्यय के द्वारा हो रहा है। 'भोक्तुम् व्रजति' वाक्य में 'तुमुन्' प्रत्यय उत्तरकालवर्ती भोजन क्रिया को द्योतित करता है। इस प्रकार दोनो वाक्यों में मौलिक अन्तर है। दोनों क्रियाएं व्रजति के सापेक्ष पूर्व तथा उत्तरकालवर्ती है।

'भुक्त्वा व्रजति' तथा 'भोक्तुम् व्रजति' को निम्न प्रकार कह सकते है -

भुक्त्वा व्रजति - पूर्व भुङ्क्ते ततो व्रजति।

भोक्तुं व्रजति - पूर्व व्रजति ततो भुङ्क्ते। अथवा भोक्ष्यामीति व्रजति।

इसीलिए 'आसित्वा भोक्तुम्' का युगपत् प्रयोग असम्भव है। एक क्रिया पूर्वकाल को तथा दूसरी क्रिया उत्तर काल को द्योतित करने के कारण दोनो प्रत्ययों के भाव में होते हुए भी समानार्थता नही है।

आसित्वा - स्वोत्तरकालवर्ती क्रिया व्रजति के प्रति विशेषणत्वेन सम्बन्ध।

भोक्तुम् - स्वार्थ साध्यमान क्रिया के प्रति विशेषणत्वेन सम्बन्ध।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दोनों का युगपत् प्रयोग सम्भव नही है।[10]

पूर्वकालिक अनेक क्रियाओं से क्त्वाविधान विचार - सूत्र में 'समानकर्तृकयोः' ऐसा द्विवचन

निर्देश है इसलिए दो क्रियाओं में जो पूर्वकालिक का द्योतन कराने वाली क्रिया है। उसी से क्त्वा प्रत्यय होना चाहिए। दो से अधिक पूर्वकाल का द्योतन कराने वाली क्रियाओं से नही होना चाहिए। ऐसी स्थिति में स्नात्वा, भुक्त्वा, पीत्वा व्रजति में क्त्वा नही होना चाहिए।

इसका समाधान करते हुए भाष्यकार ने कहा है कि अनेक पूर्वकालिक क्रियाओं से भी प्रत्यय सिद्ध है, क्योंकि क्रिया प्रधान है। यहाँ 'समानकर्तृकयोः' से क्रिया का निर्देश है। समानकर्तृकयोः में 'ओस् विभिक्त द्वारा द्विवचन का निर्देश है परन्तु वह तन्त्र नही है, विवक्षित नही है अपितु सामान्य निर्देश है।

आक्षेप - अब पूर्वपक्षी का प्रश्न है कि यह कैसे हो सकता है कि आप द्विवचन से निर्देश भी करे और उसे अतन्त्र माने ?

नान्तरीयक से समाधान - उत्तरपक्षी का समाधान है कि द्विवचन का निर्देश नान्तरीयक होने से किया गया है अर्थात् द्विवचन से निर्देश आवश्यक है। किसी ने किसी विभक्ति या वचन से निर्देश तो करना ही पड़ेगा। सर्वप्रथम दो क्रियाओं में ही पूर्वकाल तथा उत्तरकाल की चर्चा की जा सकता है इसलिए द्विवचन आवश्यक है। जैसे- कोई अन्नार्थी शक्ति को तुष तथा पलालसहित ले आता है, क्योंकि खल में लाने के लिए वह नान्तरीयक है। उसको जितना आवश्यक होता है उतना अपने पास रखता है शेष तुष और पलाल को हटा देता है। इसी प्रकार यहाँ भी द्विवचन का निर्देश नान्तरीयक होने से किया गया है। द्विवचन ही हो बहुवचनादि न हो ऐसा विवक्षित नहीं है।

कैयट का भी कहना है कि समान कर्ता वाले क्रियाओं में पौर्वकाल्य क्रिया के प्रतिपादन के लिए कम से कम दो क्रियाओं का होना आवश्यक है, इसीलिए द्विवचन का निर्देश किया गया है वस्तुतः द्विवचन ही हो ऐसा तन्त्र विवक्षित नही है।[11]

नागेश के अनुसार लोक में द्वित्व की अविवक्षा का व्यवहार देखा जा सकता है। जैसे किसी ने कहा 'इमौ चेद् व्याधितौ स्यातां देयं स्यादिदमौषधम्' इस वाक्य में व्याधितौ पद से दो व्यक्तियों द्विवचनबद्ध का निर्देश है परन्तु औषधम् में एकवचन का निर्देश है। व्याधितौ पदानुसार 'देये औषधे' होना चाहिए परन्तु ऐसा नही है, इससे स्पष्ट है कि यहाँ भी द्विवचन की अविवक्षा है।[12]

आक्षेप- पूर्वपक्षी का आपेक्ष है कि लोक में यह देखा जाता है कि पंक्ति में बैठे हुए ब्राह्मणों में से पहले को बुलाओ कहने पर सबसे प्रथम व्यक्ति को लाया जाता है, इसी प्रकार अनेक क्रियाओं के होने पर भी क्त्वा प्रत्यय केवल प्रथम क्रिया में से होना चाहिए।

कैयट का भी यही आशय है कि स्नात्वा, भुक्त्वा, पीत्वा व्रजति में स्नान क्रिया ही पूर्व में है उसी से प्रत्यय होना चाहिए, भुजि तथा पिबति क्रिया से नही।[13]

समाधान - समाधान में सुझाव दिया गया है कि 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' के स्थान पर

'समानकर्तृकयोरनन्त्यस्य' ऐसा सूत्र बनाना चाहिए। इससे अन्त्य से पूर्व सभी धातुओं से क्त्वा प्रत्यय हो जाएगा। परन्तु आचार्य पाणिनि के सूत्र में भेद उत्पन्न होगा। सूत्र को यथान्यास रखने पर पूर्वोक्त दोष प्राप्त होगा कि क्त्वा प्रत्यय प्रथम क्रिया से ही होना चाहिए।

वस्तुतः यह दोष नही है क्योंकि व्रजिक्रिया के प्रति सभी क्रियाओं की पूर्वकालता होगी। स्नात्वा व्रजति, भुक्त्वा व्रजति, पीत्वा व्रजति इस प्रकार व्रजि क्रिया का सम्बन्ध सभी से होता है। प्रयोग भी अनियत होते है। जैसे- स्नात्वा, भुक्त्वा, पीत्वा व्रजति। पीत्वा, भुक्त्वा, स्नात्वा व्रजति।

कैयट के अनुसार व्रजि आख्यातवाची क्रिया के विशेष्य होने से प्रधान है। उस के प्रति अन्य सभी क्रियाएँ गौण होने से विशेषणत्वेन परस्पर सम्बन्धित होते है।[14] इस प्रकार अनेक धातुओं से नियत तथा अनियत रूप से क्त्वा प्रत्यय हो जाता है।

'आस्यं व्यादाय स्वपीति' में पौर्वकाल्य विचार - पूर्वपक्ष का आक्षेप है कि व्यादाय स्वपीति में क्त्वा प्रत्यय का उपसंख्यान करना चाहिए, क्रिया के अपूर्वकालता होने से। व्यादाय स्वपीति = मुँह खोलकर सोता है। इस वाक्य में क्त्वा प्रत्यय कहना चाहिए क्योंकि पहले वह सोता है, तत्पश्चात् मुँह खोलता है। जबकि वाक्य में मुँह खोलना पहले तथा बाद में है।

इसका समाधान है कि स्वप्न पूर्वकाल में नही अपितु अपरकाल में होता है। वह अवश्य ही कुछ देर मुँह खोलकर सोता है, तत्पश्चात स्वप्न आता है, इसलिए स्वप्न अपरकाल वाला होने से व्यादाय स्वपीति में क्त्वा प्रत्यय के उपसंख्यान की आवश्यकता नहीं है अपितु यह स्वतः सिद्ध है।

कैयट का मत है कि यद्यपि व्यादन = मुँह खोलना से पूर्व स्वप्न क्षणों की पूर्वकालता है तथापि व्यादान के अनन्तर भाविस्वप्न प्रक्रिया की अपेक्षा से व्यादान की पूर्वकालता है।[15]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि व्यक्ति पहले शयन क्रिया करता है, पश्चात् व्यादन होता है, परन्तु भाविस्वप्न की दृष्टि से व्यादान की पूर्वकालता है इसलिए 'आस्यं व्यादान स्वपीति' में पृथक्क क्त्वा विधान की आवश्यकता नही है। इस सूत्र में तीन प्रमुख रूप बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

(1) एककर्तृक दो क्रियाओं में से पूर्वकालिक क्रिया से क्त्वाविधान।

(2) एककर्तृक अनेक क्रियाओं में से सभी पूर्वकालिक क्रियाओं से अनियतरूप से क्त्वाविधान।

(3) क्त्वा और तुमुन् प्रत्यय में मौलिक भेद।

निष्कर्ष

1) एककर्तृक क्रियाओं में 'पूर्व भुङ्क्ते पश्चात् व्रजति' वाक्य में पूर्व शब्द द्वारा भुजि

क्रिया की पूर्वकालता उक्त है, अतः क्त्वा प्रत्यय नही होता। इसीलिए 'पूर्व भुक्त्वा पश्चात् व्रजति' ऐसा वाक्य नहीं बनता।

2) पूर्वकाल द्योतित होने पर क्त्वादि का विधान किया जाता है, पूर्वकाल का नियम होने पर नही।

3) पूर्वकालविशिष्ट क्रियावृत्तिता होने पर ही क्त्वा प्रत्यय होता है, स्वार्थमात्रवृत्तिता होने पर नही।

4) 'पूर्व भुक्त्वा ततो व्रजति' वाक्य में पूर्व शब्द में क्रिया की पूर्वकालता नहीं है अपितु कर्ता की पूर्वकालता है।

5) क्रिया के कर्ताश्रित होने से कर्ता की पूर्वकालता होने पर भी क्रिया की पूर्वकालता होती है।

6) क्रिया तथा कर्ता दोनो के पौर्वकाल्य होने पर क्त्वा प्रत्यय होता है।

7) पूर्व शब्द कर्ता तथा क्रिया दोनों की पूर्वकालता का द्योतक है।

8) 'आस्यते भोक्तुम्' में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग लोक में अनभिधान के कारण नही होता।

9) यद्यपि सूत्र में दो क्रियाओं में से पूर्वकालिक क्रिया से क्त्वा प्रत्यय का विधान है, अनेक क्रियाओं के पूर्वकालिक होने से नही परन्तु भाष्यकार ने इसे अदोष माना है क्योंकि सभी क्रियाओं की व्रजि क्रिया के प्रति पूर्वकालता है। इनका प्रयोग भी अनियत है।

उपसंहार - इस प्रकार हम देखते है कि महाभाष्य में प्रत्यय के पूर्वकाल में प्रयोग के संबंध में उपस्थापित सभी दोषों का शास्त्रीय और लौकिक विधि से समाधान किया गया है।

संदर्भ -

1.समानशब्द एकवाची शक्तिशक्तिमतोश्चाभेद विवक्षया क्रियायोरेककर्तृत्वनम्। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

2. शक्तिमद्रूतैकत्वस्य शक्त्योरारोपणैककर्तृकत्वोपपत्तिरितिभावः महाभाष्यप्रदीपोद्योत 3.4.21

3. अष्टाध्यायी 2.3.7

4.पौर्वकाल्ये द्योत्ये क्त्वादिर्विर्धीयते न तु विषय इति भावः। पूर्वशब्दस्यात्रा क्रियापौर्वकाल्यवाचित्वादग्रादिसूत्रोणापि न भवति। अग्रादीनां साधनपौर्वकाल्यविषयाणां तत्रा ग्रहणात्। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

5.नात्रा धातोः पूर्वकालविशिष्टक्रियावृत्तिता, किंतु स्वार्थमात्रवृत्तितेति भावः। महाभाष्यप्रदीपोद्योत 3.4.21

6.द्विविधात्र भुजेः पूर्वकालता व्रजिक्रियापेक्षा तस्यां क्त्वाप्रत्ययः। भोक्तान्तरसाध्यभुजिक्रियापेक्षा च तां पूर्वशब्द उपादत्ते। ततश्चाग्रादिसूत्रोणात्र क्त्वाणमुलौ भवत इति भावः। कर्तृपौर्वकाल्यं च क्रियाद्वारकमेव

बोद्धव्यम्। क्रियाविषयत्वात् कालव्यवहारस्य। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

7.आसेः पूर्वकालत्वाद्भावस्य च प्रतिपाद्यत्वात् आसित्वा भोक्तुमिति प्राप्नोतीतिभावः। महाभाष्यप्रदीप3.4.21

8.वाऽसरूपोऽस्त्रियामित्यत्र स्त्रियाः प्रागिति पक्षो नाश्रितः। किं तर्हि? स्त्र्यधिकारे वाऽसरूपविधिर्नेति। यदा त्वासेः क्त्वा भवति तदा भुजेः तुमुन्न भवति अनभिधानात्। न ह्यासित्वा भोक्तुमित्याद्यभिधानमस्ति। तस्माल्लडादय एवं भुजेर्भवन्ति आसित्वा भुङ्क्ते इति। महाभाष्यप्रदीप3.4.21

9.अष्टाध्यायी 3.1.94

10.तुमुन्नन्तार्थस्य स्वार्थफलक्रियां प्रति विशेषणत्वनियमात् क्त्वान्तार्थस्य च स्वोत्तरकालक्रियां प्रति विशेषणत्वनियमात्। न चैतदुभयं युगपत्सभवतीति भावः। महाभाष्यप्रदीपोद्योत 3.4.21

11.समानकर्तृकक्रियान्तरापेक्षपौर्वकाल्यप्रतिपादनपरत्वान्निर्देशस्य नान्तरीयकत्वादुपात्तं द्वित्वमत्राविवक्षितमित्यर्थः। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

12.'इमौ चेद् व्याधितौ स्यातां देयं स्यादिदमौषधम्' इत्यादौ लोके द्वित्वस्याप्यविवक्षादर्शनात्। महाभाष्यप्रदीपोद्योत 3.4.21

13.अमीषां ब्राह्मणानां पूर्वमानयेत्युक्ते पङ्क्तौ यः सर्वेषामादिः स एवानीयते तथेहापि स्नात्वा भुक्त्वा पीत्वा व्रजतीति स्नानस्यैव पूर्वत्वात् स्नातेरेव प्रत्ययेन भाव्यं न तु भुजिपिवतिभ्यामित्यर्थः।महाभाष्यप्रदीप3.4.21

14.आख्यातवाच्यायाः क्रियाया विशेष्यत्वात्प्राधन्यात्तां प्रति सर्वासां विशेषणत्वात् परस्परेणासम्बन्धः। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

15.यद्यपि स्वप्नक्षणानां व्यादानात् पूर्वकालता तथापि व्यादानानन्तरभाविस्प्नप्रक्रियापेक्षं व्यादानस्य पूर्वकालत्वमस्तीत्यर्थ। महाभाष्यप्रदीप 3.4.21

संदर्भ ग्रन्थ

1.अष्टाध्यायी सूत्रपाठ-सं. प. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली, सोनीपत, 2010

2.व्याकरणमहाभाष्यम् (भाष्यप्रदीपोद्योतसमुल्लसितम्) संशो. श्रीभार्गवशास्त्री जोशी, चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2011